इकाई 9 मानविकी की भाषा (ललित कला) तथा विशेषण

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 भारत की ललित कलाएँ

- 9.2.1 विभिन्न ललित कलाएँ
- 9.2.2 स्थापत्य कला
- 9.2.3 मूर्तिकला
- 9.2.4 चित्रकला
- 9.2.5 संगीत कला
- 9.2.6 काव्य कला

9.3 व्याकरणिक विवेचन

- 9.3.1 विशेषण
- 9.3.2 वाक्य-रचना

9.4 सारांश

9.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम मानविकी के एक महत्वपूर्ण अंग ललित कला पर पाठ दे रहे हैं। कला विषयक पाठ पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य इस विषय से संबंधित भाषा, पारिभाषिक शब्दों तथा रचना प्रयोगों से परिचित कराना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मानविकी की भाषा, विशेषतः ललित कला में प्रयुक्त भाषा की विशिष्टता पहचान सकेंगे तथा भारतीय ललित कलाओं के विकास को भी बता सकेंगे;
- पाठ में प्रयुक्त विशेषणों के संदर्भ में विशेषण का अर्थ और महत्व बता सकेंगे तथा विशेषण का सही प्रयोग कर सकेंगे;
- विशेषण शब्दों को संज्ञा शब्दों में बदल सकेंगे;
- प्रविशेषण का सही प्रयोग कर सकेंगे;
- दो या अधिक वस्तुओं की विशेषता की तुलना वाले वाक्यों को सही रूप में लिखना सीख सकेंगे; और
- वाक्य-रचना के अंतर्गत मुख्य वाक्यांश और पूरक वाक्यांश के संबंध को समझ सकेंगे और ऐसे वाक्यों में लिंग, वचन, कारक आदि का सही प्रयोग कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

यह इकाई भारतीय ललित कला से संबंधित है। इससे पूर्व की इकाइयों में आपने राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं विज्ञान विषयक पाठों का अध्ययन किया है। इस

पाठ में हम आपको भारतीय ललित कलाओं का संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं। भारत की विभिन्न कलाएँ हमारी संस्कृति की महान धरोहर हैं। भारतीय कलाओं में उन सभी जातियों और समुदायों के अवदान का प्रतिबिंब है, जो समय-समय पर भारत में आए और यहाँ के जन-जीवन में घुलमिल गये। संस्कृति की ही तरह भारतीय कला भी इन सभी के मिले-जुले अवदान का प्रतिफल है।

इस इकाई में हमने अपना मुख्य बल स्थापत्य, मूर्ति, चित्र एवं संगीत कला पर ही रखा है, क्योंकि साहित्य का विस्तृत अध्ययन आप आगे ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के अंतर्गत करेंगे। पाठ के साथ जो बोध प्रश्न दिए गए हैं, उनसे आपको पाठ को समझने में मदद मिलेगी।

आप देखेंगे कि विशेषणों का प्रयोग इस पाठ में अधिक हुआ है। इसलिए "व्याकरणिक विवेचन" में हमने विशेषण के कुछ पहलुओं और भेदों पर चर्चा की है। इससे आप को विशेषण का सही प्रयोग करने में मदद मिलेगी। इसी तरह "वाक्य रचना" में हमने ऐसे वाक्यों की रचना पर विचार किया है, जिनमें पूरक वाक्यांश के कारण लिंग, वचन और कारक की त्रुटियाँ हो जाती हैं। हमने ऐसे वाक्यों की रचना के नियमों पर संक्षेप में विचार किया है, इससे आपको इस तरह की त्रुटियों को सुधारने में मदद मिलेगी।

9.2 भारत की ललित कलाएँ

कला क्या है?

1. हम में से प्रायः सभी को कुछ ऐसे शौक ज़रूर होते हैं, जिनमें विशेष तरह का आनंद आता है। किसी को फ़िल्म देखने का शौक है तो किसी को संगीत सुनने का। किसी को क्रिकेट की कमेंटरी सुनने में मज़ा आता है। कहने का मतलब यह है कि हम कुछ ऐसे कामों में भी रुचि लेते हैं, जिनसे हमारी भौतिक ज़रूरतें पूरी नहीं होतीं, बल्कि जो हमें मानसिक और आत्मिक आनंद प्रदान करते हैं। हम में से कोई पेशे से दुकानदार हो सकता है लेकिन साथ ही उसे वायलिन बजाने का भी शौक हो, कोई गृहिणी अच्छी कविताएँ भी लिखती हो। सच्चाई यह है कि बौद्धिक और सांस्कृतिक क्रियाकलापों से जुड़कर हम अपने जीवन को अधिक समृद्ध और सार्थक बनाना चाहते हैं। जिस तरह भोजन से शरीर का पोषण होता है, उसी तरह कला से मन और बुद्धि का पोषण होता है। मनुष्य जब भौतिक जीवन से ऊपर उठकर मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिए प्रयत्न करता है, तो इस प्रयत्न से भले ही कोई भौतिक लाभ न हो, लेकिन उससे जीवन को पूर्णता और सार्थकता प्राप्त होती है।

2. हम जो भी कार्य करते हैं उसे करते हुए दो बातों पर ध्यान देते हैं। एक तो इस बात का कि जिस ज़रूरत से प्रेरित होकर हम वह काम कर रहे हैं, वह ज़रूरत मुकम्मल तौर पर पूरी हो। इसे हम कार्य का भौतिक पक्ष कह सकते हैं। जैसे एक कुर्सी बनानी हो, तो हम उसकी मज़बूती, उस पर बैठने में सुविधा तथा उसकी लकड़ी को कीड़े न खा जाएँ इस बात का ध्यान रखेंगे। लेकिन जब हम कोई काम करते हुए यह भी विचार करें कि वह काम अच्छे ढंग से पूरा हो, काम करते हुए आनंद आए, हमारे द्वारा किया गया काम दूसरों को भी रुचिकर और आनंद प्रदान करने वाला लगे, तो इसे हम उस कार्य का सौंदर्य पक्ष कहेंगे। जैसे कुर्सी पर बेल-बूटे बनाना, उस पर ऐसा रंग-रोगन करना जो दिखने में सुंदर लगे। इससे कुर्सी की उपयोगिता में कोई फ़र्क नहीं आता। फिर भी, इससे सभी को मानसिक और आत्मिक आनंद प्राप्त होता है।

3. अब तक जो बातें आपको बतायी गयी हैं उनसे आप समझ सकते हैं कि कला क्या है। अपने व्यापक अर्थ में मनुष्य द्वारा दक्षता से किया गया कोई भी कार्य "कला" कहा जाएगा। लेकिन जो कार्य मानव के भौतिक उपयोग से प्रेरित होकर किया गया हो, वह उपयोगी कला के अंतर्गत आता है और जो कार्य सौंदर्यात्मक उद्देश्य से प्रेरित होकर किया जाता है वह ललित कला के अंतर्गत आता है। सौंदर्यात्मक उद्देश्य का अर्थ है, जो हमारे मन और आत्मा को आनंद पहुँचाए।

4. यहाँ हम सिर्फ़ ललित कलाओं की चर्चा करेंगे। आप जानते हैं कि ललित कलाएँ कितनी हैं? आपने ताज़महल देखा होगा, राजपूत या मुगल शैली के चित्र देखे होंगे, ध्यानस्थ बुद्ध की प्रतिमा देखी होगी, भीमसेन जोशी या एम.एस. सुब्बालक्ष्मी का गायन सुना होगा, प्रेमचंद का "गोदान" पढ़ा होगा, "आषाढ़ का एक दिन" नाटक देखा होगा। ये सभी ललित कलाएँ हैं। इन्हें हम पाँच भागों में बाँट सकते हैं - स्थापत्य (गृह-निर्माण), मूर्ति, चित्र, संगीत और काव्य।

9.2.1 विभिन्न ललित कलाएँ

5. घर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। घर, हमारा एक छोटा सा संसार है, जहाँ हम पलते एवं बड़े होते हैं, जहाँ हमारे सुख-दुःख से भरे जीवन की अनगिनत घड़ियाँ बीतती हैं। मनुष्य अपने लिए सुख-सुविधा से परिपूर्ण घर ही नहीं चाहता, वह घर को सुंदर और भव्य भी देखना चाहता है। इसलिए वास्तुकला या स्थापत्य करना अर्थात् मकान-निर्माण को एक कला माना गया है। वास्तुकार या स्थपति उसकी इच्छा को पूर्ण करता है और इसी में स्थापत्य कला की अभिव्यक्ति होती है। भवन, महल, दुर्ग, पूजागृह (मंदिर, मस्ज़िद आदि), स्तंभ (मीनार) आदि के निर्माण में भी यही कला मूर्त होती है।

6. मंदिरों में स्थापित मूर्तियाँ, जिनमें भक्त भगवान का साक्षात् रूप देखता है, मूर्ति कला की उत्कृष्टता को अभिव्यक्त करती है। मूर्ति कला में जहाँ शारीरिक सौष्ठव का कलात्मक निर्माण होता है, वहीं मूर्ति के चेहरे पर विभिन्न भाव मुद्राओं को जीवंत बना देना भी उसका महत्वपूर्ण अंग है। स्थापत्य कला पत्थरों को छेनी-हथौड़े के द्वारा सौंदर्यात्मक रूप देकर निर्मित होती है। मूर्तियाँ भी मुख्यतः पत्थरों को तराश कर बनायी जाती हैं, किंतु धातु, लकड़ी और मिट्टी से भी मूर्तियों की रचना होती रही है। पत्थर या लकड़ी की मूर्तियाँ तराशी जाती हैं, धातु की मूर्तियाँ गढ़ी जाती हैं। स्थापत्य और मूर्ति कला में स्थापत्य अधिक स्थूल कला है।

7. भवनों और मूर्तियों का निर्माण लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई में होता है, इसलिए इन्हें त्रिआयामी कलाएँ कहा जाता है। चित्रकला द्विआयामी कला है क्योंकि चित्रों का निर्माण लंबाई और चौड़ाई में होता है। चित्रकार कागज़, कपड़ा या भित्ति (दीवार) पर रंगों और रेखाओं के माध्यम से चित्रों का निर्माण करता है। स्थापत्य और मूर्तिकला की अपेक्षा चित्रकला जीवन का बहुआयामी अंकन कर सकती है। इन तीनों में चित्रकला सबसे अधिक सूक्ष्म कला है।

8. अगर आपने स्थापत्य, मूर्ति और चित्र कला पर गौर किया हो तो, आपको कुछ समान विशेषताएँ नज़र आएँगी। जैसे ये तीनों कलाएँ दिक् पर आधारित हैं क्योंकि इन्हें हम दिक् (Space) में ग्रहण करते हैं। दूसरे, इन तीनों कलाओं के लिए भौतिक उपादानों की ज़रूरत होती है। जैसे, स्थापत्य में पत्थर की, मूर्ति में पत्थर, मिट्टी, धातु या लकड़ी की और चित्र में भित्ति, कागज़ या कपड़े की। संगीत और काव्य कलाओं में इन भौतिक उपादानों की जरूरत नहीं होती। दूसरा अंतर यह है कि संगीत और काव्य कला काल-आधारित कलाएँ हैं अर्थात् इनका रसास्वादन हम काल के प्रवाह में करते हैं। तीसरा अंतर स्थूलता का है। स्थापत्य, मूर्ति और चित्र कला में कलाकारों के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति स्थूल रूप में होती है, जबकि संगीत और काव्य में सूक्ष्म रूप में। संगीत में कला का आधार स्वर और लय है, जिसे कलाकार गायन या वादन द्वारा व्यक्त करता है। संगीत में भावों के उतार-चढ़ाव की बारीकियों को व्यक्त किया जा सकता है। संगीत काव्य से अधिक भाव प्रधान होता है।

9. काव्य या साहित्य सबसे अलग किस्म की कला है। इसमें भाषा को कला-रचना के उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। साहित्य सबसे सूक्ष्म कला है क्योंकि इसके द्वारा हम अपने भावों और विचारों की जटिलता और सूक्ष्मता को सहज ही प्रस्तुत कर सकते हैं। काव्य में कई विधाएँ आती हैं। जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता आदि। नाटक का इस दृष्टि से विशेष महत्व है क्योंकि रंगमंच पर नाट्य की प्रस्तुति में अन्य कलाओं का भी समावेश हो जाता है। नृत्य का संबंध नाट्य और संगीत दोनों से है और इसे दोनों कलाओं में

10. आपके मन में प्रश्न उठ रहा होगा कि फ़िल्म कला है? और फ़ोटोग्राफी? निश्चय ही ये दोनों कलाएँ हैं। फ़िल्म नाट्य कला का और फ़ोटोग्राफी चित्रकला का ही विकास है। आधुनिक तकनीकों ने इन दोनों कलाओं को संभव बनाया है।

बोध प्रश्न

1. नीचे कुछ शब्द और उनकी व्याख्याएँ दी गई हैं। उन्हें सही क्रम से रखिए।

i)	मनुष्य द्वारा दक्षता से किया गया कार्य	क)	ललित कला
ii)	भौतिक उपयोग से प्रेरित होकर किया गया कार्य	ख)	संगीत कला
iii)	सौंदर्यात्मक उद्देश्य से प्रेरित होकर किया गया कार्य	ग)	उपयोगी कला
vi)	लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई में निर्मित कला	घ)	चित्रकला
v)	काल आधारित कला	ङ)	वास्तुकला

2. नीचे दी गई ललित कलाओं को वर्गीकृत कीजिए।

कलाओं के नाम	काल आधारित	दिक् आधारित	त्रिआयामी	द्विआयामी	दृश्यकला	श्रव्यकला
	क	ख	ग	घ	ङ	च
स्थापत्य						
चित्रकला						
मूर्तिकला						
संगीत कला						
काव्य						
नृत्य						
नाट्य						
फ़िल्म						
फ़ोटोग्राफी	-	3	3		3	

भारतीय कला का विकास

11. इतना जानने के बाद आपके मन में इस जिज्ञासा का उठना लाज़मी है कि भारत में इन कलाओं का विकास कब और कैसे हुआ। आइए, हम इनका थोड़ा परिचय प्राप्त करें। भारत में ललित कलाओं का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना भारत का ज्ञात इतिहास। आपको विदित होगा कि भारत की सभ्यता का आरंभ हड़प्पा सभ्यता से माना जाता है। यह हड़प्पा सभ्यता पाँच हज़ार वर्ष से भी ज़्यादा पुरानी है। इसके अवशेषों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत में ललित कलाओं का विकास हड़प्पा से भी पुराना है क्योंकि हड़प्पा तो काफी विकसित सभ्यता थी। आइए, हम पाँचों ललित कलाओं का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करें।

9.2.2 स्थापत्य कला

12. आपने इतिहास की पुस्तकों में मोहनजोदड़ो और कालीबंगा में उत्खनन (खुदाई) से प्राप्त अवशेषों के छायाचित्र देखे होंगे। इन चित्रों को देखकर आप स्थापत्य की भव्यता का

मंज़िल के होते थे। घरों में रहने-सोने के कमरों, स्नान घर के साथ ही छत पर जाने की सीढ़ियाँ बनी होती थीं। नगर के बाहर स्नान के लिए पक्की ईंटों के लंबे-चौड़े तालाब बनाये जाते थे। उनके चारों ओर कपड़े बदलने के लिए बरामदे और कमरे आदि बनाये जाते थे। ऋग्वेद की ऋचाओं में भी दुर्गों और पुरों की चर्चा की गयी है। इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन युग में किले, महल और घर भव्य और विशाल होते थे और उन्हें नगरीय जीवन की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जाता था।

13. हड़प्पा सभ्यता के बाद स्थापत्य के जो उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं, उनमें मंदिर, स्तंभ, स्तूप, मकबरे, मस्ज़िद आदि प्रमुख हैं। भारतीय स्थापत्य कला का मनोहारी रूप मंदिरों के निर्माण में व्यक्त हुआ है। आपने मदुरै का मीनाक्षी मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर, माउंट आबू के जैन मंदिर आदि कई प्राचीन और भव्य मंदिर देखे होंगे। लेकिन ये सभी मंदिर एक ही शैली के नहीं हैं। भारत में मंदिर निर्माण की तीन शैलियाँ हैं - नागर, द्राविड़ और वेसर शैली। नागर शैली के मंदिर प्रायः उत्तर भारत में, द्राविड़ के दक्षिण भारत में और वेसर के मध्य भारत में मिलते हैं। वेसर वस्तुतः नागर और द्राविड़ शैलियों का मिश्रित रूप है।

14. नागर शैली में कुछ सामान्य विशेषताओं के साथ-साथ स्थानीयता का प्रभाव भी साफ़ नज़र आता है। इस शैली के मंदिर प्रायः 900 ई0 से 1300 ई. के मध्य बने हैं। हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा, कुल्लू, चंबा, मण्डी आदि के मंदिर इस दृष्टि से अत्यंत रमणीय हैं। विशेषतः बैजनाथ मंदिर (9वीं सदी) इस दृष्टि से दर्शनीय हैं। राजस्थान में माउंट आबू के जैन मंदिर (दिलवाड़ा मंदिर) अपनी सूक्ष्म नक्काशी के लिए विख्यात हैं। इन मंदिरों की छतें बहुमूल्य संगमरमर की बनी हैं। उनकी दीवारों, छतों और स्तंभों पर की गई कलात्मक नक्काशी अपने सूक्ष्म सौन्दर्य से दर्शकों को अभिभूत कर लेती है। उड़ीसा के मंदिरों में सर्वश्रेष्ठ है कोणार्क का सूर्य मन्दिर। भारत के सबसे सुंदर मंदिरों में इसकी गणना होती है। इसका निर्माण 13वीं शती मे हुआ था। मध्य प्रदेश के खजुराहो के मंदिर भी अपनी भव्यता, शिल्प-कौशल और कायिक दिव्यता में बेजोड़ हैं।

15. द्राविड़ शैली के मंदिर नागर से अलग तरह के हैं। इस शैली के मंदिरों में आँगन का मुख्य द्वार जिसे गोपुरम् कहते हैं इतना ऊँचा होता है कि अनेक बार वह प्रधान मंदिर के शिखर तक को छिपा लेता है। परंतु तंजौर, गंगैकोंडपुरम् और कांजीवरम् के मंदिर इतने ऊँचे और उनके गोपुरम् अनुकूलाकृतिक हैं कि दोनों का संबंध वास्तु की रमणीयता को बढ़ाता है, घटाता नहीं।

16. द्राविड़ शैली का आरंभ ईसा की सातवीं सदी में हुआ। इसका आरंभ पल्लव राजाओं के सहयोग से हुआ, जिन्होंने कांजीवरम् (कांजी) में इस शैली के महत्वपूर्ण मंदिर बनवाये। तंजौर के चोल राजाओं का भी मंदिर निर्माण में स्तुत्य प्रयास रहा। तंजौर के विशाल बृहदीश्वर और सुब्रह्मण्यम् मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से असाधारण हैं। द्राविड़ शैली के मंदिरों की अंतिम श्रृंखला सोलहवीं सदी की है। ये मंदिर विशाल और भव्य हैं। रामेश्वरम्, मदुरै, तिन्नेवेली के मंदिर इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। मदुरै का प्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर स्थानीय राजा तिरुमल नायक (1623-59) ने बनवाया। इसका गोपुरम् भी अत्यंत भव्य है। इस प्रकार के मंदिरों में असाधारण लंबे ढके बरामदे होते हैं। रामेश्वरम् का बरामदा तो 4000 फुट लंबा है और इनमें अत्यंत सुंदर मूर्तियाँ हैं।

17. आपने सारनाथ और साँची के बौद्ध स्तूप भी देखे होंगे। सारनाथ का धर्मराजिका स्तूप बहुत प्रसिद्ध है। स्तूप वस्तुतः एक तरह का समाधि स्थल होता है, जहाँ मृतक की अस्थियाँ रखी जाती हैं। भारत के प्राचीनतम स्तूप साधारणतः एक प्रकार के टीले हैं, अर्धवर्तुलाकार, ऊँचे और ठोस। ये स्तूप बौद्ध स्तूप हैं। सारनाथ और साँची के स्तूप में बुद्ध की अस्थियाँ रखी हैं। सारनाथ, भरहुत और साँची के स्तूप अशोक के समय के हैं।

18. मुसलमानों के आगमन के साथ ही हम स्थापत्य कला के एक नये युग में प्रवेश करते हैं। आगरा का ताज़महल, लाल किला, फतेहपुर सीकरी और उसका बुलंद दरवाज़ा, दिल्ली की कुतुब मीनार, लाल किला, हुमायूँ का मकबरा, जामा मस्ज़िद आदि कुछ प्रसिद्ध इमारतें

ताज़महल का सौंदर्य और उसकी भव्यता को तो कभी भुलाया नहीं जा सकता। मुस्लिम शासकों ने अपनी अभिरुचि के अनुकूल स्थापत्य कला को एक नयी शैली दी। इन शासकों द्वारा बनवायी गयी सभी इमारतों में हिंदुओं और मुसलमानों का सम्मिलित श्रम और प्रतिभा प्रयुक्त हुई है। विश्व में अपनी तरह की अकेली मीनार - कुतुबमीनार के निर्माण में हिंदू वास्तुकारों का योग रहा है। जौनपुर की प्रसिद्ध अताला मस्ज़िद, अकबर द्वारा बनवाये गये आगरे के किले और फतेहपुर सीकरी के कई भवनों पर मुगल काल से पहले की भारतीय स्थापत्य शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। दिल्ली का हुमायूँ का मकबरा, जो ताज़महल का आभास और बारीकी लिए हुए हैं, अकबर ने ईरानी शैली में बनवाया था। औरंगज़ेब को छोड़कर प्रायः सभी मुस्लिम शासकों ने कला के उत्थान में गहरी रुचि दिखायी थी। लेकिन इनमें शाहजहाँ का योगदान अविस्मरणीय है। उसने दिल्ली के लाल किले सहित कई भव्य इमारतें बनवायीं, किंतु मुगलकाल की सबसे सुंदर और शालीन इमारत ताज़महल का निर्माण कराकर उसने भारतीय स्थापत्य कला को बुलंदियों पर पहुँचा दिया। ताजमहल अपने अनुपम सौन्दर्य के कारण विश्व का एक आश्चर्य माना जाता है। शाहजहाँ ने अपनी प्रिय पत्नी आरज़ूमंद बानू बेगम (मुमताज महल) की स्मृति में इसे बनवाया था। आगरे में यमुना के किनारे सफ़ेद संगमरमर से बना यह मकबरा अपनी शालीनता और भव्यता में अद्वितीय है। इस जैसी सुंदर इमारत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ताजमहल के शिल्प में स्थापत्य की परिपूर्णता दिखायी देती है।

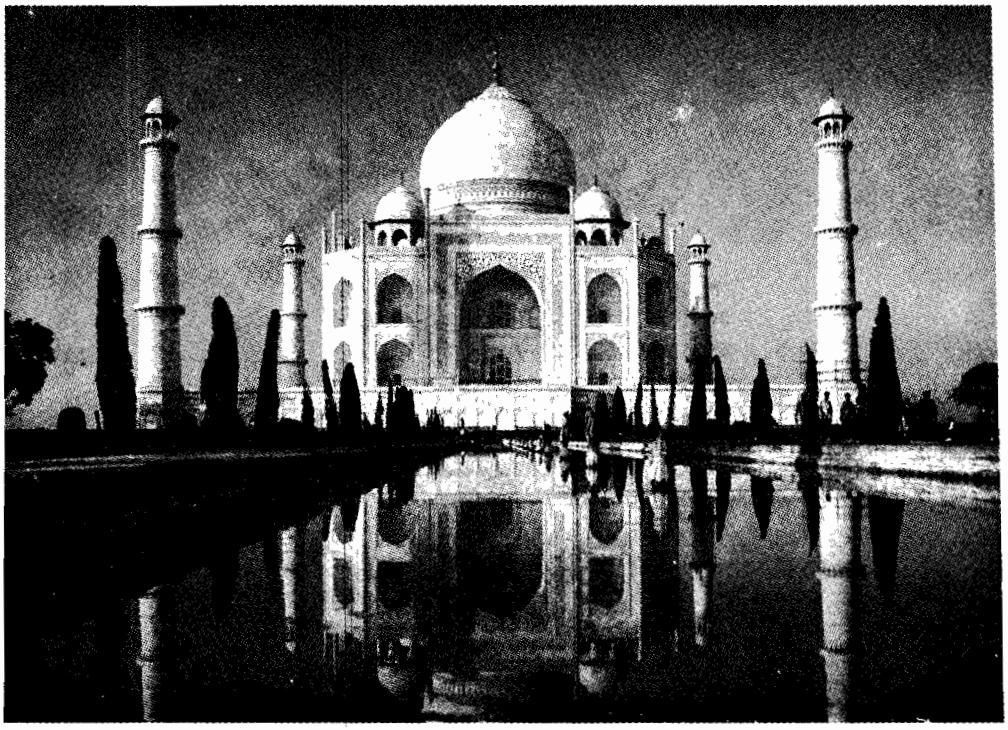

ताजमहल

9.2.3 मूर्तिकला

19. आपने सिक्कों पर तीन सिंहों का अंकन देखा होगा, जिसके नीचे एक चक्र भी है। यही चक्र हमारे झंडे पर भी है। आपको मालूम होगा कि यह हमारा राष्ट्रीय चिह्न है। यह चिह्न सारनाथ (वाराणसी) से प्राप्त अशोक के एक स्तंभ के शीर्ष से लिया गया है। यह स्तंभ-शीर्ष अपने सौंदर्य में अनुपम है। सिंह की शालीनता, प्रकृति विरुद्ध शांतमुद्रा अशोक की राजनीति के अनुरूप थी, जो शांति और अहिंसा के सिद्धांत पर टिकी थी। यह स्तंभ-शीर्ष मूर्तिकला की प्रतीकात्मकता का अच्छा उदाहरण है। आप जानते हैं कि मूर्तियाँ ईश्वरीय प्रतीक के रूप मे, भारत में लंबे समय से पूजी जाती रही हैं, इसलिए अव्यक्त ईश्वर को व्यक्त करने के लिए मूर्ति का निर्माण भारत में अत्यंत प्राचीन काल से होता रहा है। मूर्तियों का एक और उद्देश्य है - अतीत की स्मृतियों को जीवित रखना। इस तरह मूर्ति निर्माण के पीछे लौकिक

20. स्थापत्य कला की तरह मूर्ति कला का आरंभ भी भारत में हड़प्पा सभ्यता से माना जा सकता है। स्थापत्य और मूर्ति दोनों कलाओं में हड़प्पा के बाद के अवशेष प्रायः मौर्यकाल (325-188ई.पू.) या उससे कुछ पहले के मिलते हैं। मूर्तिकला में भी समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं और नयी-नयी शैलियाँ अस्तित्व में आती रही हैं। मौर्यकाल की मूर्तिकला में यथार्थता और आकर्षक सौंदर्य अभूतपूर्व है। अशोक कालीन मूर्तिकला इसी युग की है। मौर्यकाल के बाद शुंग (150-73 ई.पू.) और शक-कुषाण काल (ई.पू. पहली सदी - 300 ई. तक) में मूर्तिकला का विकास हुआ। शुंगकला उतनी यथार्थपरक नहीं है। इन दोनों कालों में पत्थर और मिट्टी दोनों का उपयोग हुआ। कुषाणकाल की मथुरा में पाई गई यक्षिणियों की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिनमें सामाजिक जीवन के आनंद और उल्लास को प्रत्यक्ष देखा जा सकता है।

21. बुद्ध की समाधिस्थ मूर्तियाँ मूर्तिकला की अमूल्य संपदा हैं। गंधार प्रदेश (अफ़गानिस्तान) में ग्रीक कलाकारों ने अपनी शैली से जिन भारतीय विषयों, अभिप्रायों, प्रतीकों का कलात्मक रूपायन किया, उन्हें गंधार शैली के नाम से जाना जाता है। कुषाणकाल में ही इस शैली का विकास हुआ था। इस शैली की सभी मूर्तियाँ सिर्फ़ बौद्ध स्थलों से उपलब्ध हुई हैं। बुद्ध मूर्तियाँ गुप्तकाल (275-500 ई.) में भी निर्मित हुईं। इनमें सारनाथ की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बैठी बुद्ध मूर्ति शिल्पकला एवं सौंदर्यप्रभाव में अद्वितीय है। वस्तुतः मूर्तिकला के विकास में बौद्ध धर्म का योगदान उल्लेखनीय है।

नटराज

22. हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार रही है। ईश्वर के साकार रूप की आराधना के लिए मूर्ति को ही ईश्वर मानकर उसकी पूजा-अर्चना वैष्णव भक्ति का मुख्य अंग है। ईश्वर के विभिन्न अवतारों तथा अन्य देवी-देवताओं की मूर्तियों का निर्माण काफ़ी लंबे समय से होता रहा है। दूसरी-तीसरी शताब्दी के बाद से हिंदू धर्म के पौराणिक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ मिलने लगती हैं। शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी आदि की मूर्तियाँ इस दृष्टि से दर्शनीय हैं। सातवीं सदी के बाद की अधिकांश मूर्तियाँ मंदिर मूर्तियाँ हैं। इनमें भी मंदिरों में स्थापित या शिखरों पर उकेरी गयी मूर्तियाँ विशेष उल्लेखनीय हैं। इस युग में कोणार्क, खजुराहो और एलोरा के मंदिरों पर अलंकरण के रूप में उकेरी गयी मूर्तियों का सौंदर्य देखते ही बनता है। कोणार्क और खजुराहो के यौन-अंकन कला की दृष्टि से अत्यंत

23. ग्यारहवीं-बारहवीं सदी के बाद यद्यपि उत्तर भारत में मूर्तिकला का विकास अवरुद्ध हो गया था, लेकिन दक्षिण में यह विकास जारी रहा। शुद्ध अलंकरण की दृष्टि से 12वीं सदी के चालुक्य और होयसल मंदिरों की मूर्तियाँ अप्रतिम हैं। धातु (विशेषकर तांबे और पीतल) की अनेक मूर्तियाँ कर्नाटक में बारहवीं और अठारहवीं सदी के मध्य ढाली गयीं। इस दृष्टि से नटराज (नृत्य करते शिव) की मूर्तियाँ अत्यंत सुंदर हैं। भारतीय मूर्तिकला के विकास में आधुनिक युग का महत्वपूर्ण योग है। यद्यपि आज कला पर पश्चिम की शैलियों का प्रभाव अधिक नजर आता है।

बोध प्रश्न

3. i) नीचे दिये वाक्यों में स्थापत्य कला की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। इनमें से एक विशेषता स्थापत्य कला पर लागू नहीं होती, बताइए।

   क) स्थापत्य त्रिआयामी कला है।

   ख) स्थापत्य के लिए भौतिक उपादानों की आवश्यकता होती है।

   ग) स्थापत्य के माध्यम से कलाकार के विचारों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति होती है।

   घ) स्थापत्य स्थूल कला है। [ ]

   ii) नीचे दिये वाक्यों में संगीत कला की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। इनमें से एक विशेषता संगीत पर लागू नहीं होती, बताइए।

   क) संगीत कालाधारित कला है।

   ख) संगीत द्विआयामी कला है।

   ग) संगीत के माध्यम से कलाकार के भावों की अभिव्यक्ति होती है।

   घ) संगीत में कला का आधार स्वर और लय है। [ ]

4. नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   i) मंदिर निर्माण की शैलियों के नाम बताइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   ii) मुग़लकालीन स्थापत्य कला के कोई तीन उदाहरणों के नाम बताइए।

   .....

   .....

   .....

   .....

   iii) गंधार शैली किसे कहते हैं?

   .....

   .....

   .....

9.2.4 चित्रकला

24. रंगों और रेखाओं से बनने वाले चित्र मानव की भावनाओं को व्यक्त करने के माध्यम रहे हैं। मिर्ज़ापुर और मध्यप्रदेश में गुफ़ाओं की दीवारों पर बने रेखाचित्र पाषाण युग के हैं। ये चित्र उस आदिम मानव की भाव-चेतनाएँ व्यक्त करते हैं, जिसने भय, पूजा और उल्लास में ये चित्र बनाये। आपने कला संग्रहालयों में तरह-तरह के चित्र देखे होंगे, जिन पर मुग़ल काल शैली, राजपूत शैली, कांगड़ा कलम, पहाड़ी कलम आदि पढ़ा होगा। वस्तुतः भारत में चित्र कला की कई शैलियों का विकास हुआ है, जिन्हें हम छह भागों में बाँट सकते हैं -

1) अजंता शैली 2) गुजरात शैली 3) मुग़ल शैली

4) राजपूत शैली 5) दकनी शैली 6) आधुनिक शैली

25. अजंता शैली के चित्र भित्ति चित्र हैं और गुफ़ाओं की दीवारों पर बनाये गये हैं। ये चित्र ईसा से प्रायः सौ वर्ष से लेकर ईसा के बाद सातवीं सदी तक के हैं। अधिकतर चित्र मिट गये हैं या मलिन हो गये हैं। लेकिन जो बचे हैं वे अद्‌भुत हैं। इन चित्रों में बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं की घटनाएँ चित्रित की गयी हैं। अलंकरणों के चित्रों में अजंता के कलाकारों ने अपूर्व कौशल प्रदर्शित किया है। फूल, पक्षी, पशु, गंधर्व, देव सभी सुंदर एवं जीवंत रूप में चित्रित किये गये हैं। उनमें अद्‌भुत कोमलता और सजीवता है।

26. गुजराती शैली का दूसरा नाम जैन शैली है क्योंकि अधिकतर इस शैली में जैन कल्पसूत्रों का ही ग्रंथ चित्रण किया गया है। इस शैली के चित्र अधिकतर पंद्रहवीं सदी के हैं। इसी शैली से लघुचित्र शैली (मिनिएचर) भी निकली है। इनके विषय धार्मिक ही नहीं, लौकिक भी हैं।

27. मुग़ल शैली भारतीय चित्र कला के संसार में अपना अलग स्थान रखती है। अपनी सुरुचि और परिष्कार तथा कूची के स्पर्श की कोमलता और हाशिये की कसीदाकारी से वह तत्काल पहचानी जा सकती है। यह शैली फ़ारस (ईरान) और भारत के सम्मिलित प्रयास का परिणाम है। मुग़ल शैली का आरंभ हुमायूँ (16वीं सदी) के काल में हुआ। इस कला को आगे बढ़ाने में अकबर का योगदान भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। कुछ को छोड़कर प्रायः सभी मुग़ल चित्र कागज पर बने हैं। आरंभ के मुगल चित्रण में ग्रंथ चित्रण अधिक हुए हैं। महाभारत, रामायण के फ़ारसी अनुवादों, अकबरनामा, रसिकप्रिया आदि पर बनाये गये चित्र उल्लेखनीय हैं। इस तरह साहित्य और चित्रकला का सुखद संयोग स्थापित हुआ। मुग़ल शैली में लिपिकारिता (किताबत) का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मुग़ल शैली प्रधानतः प्रतिकृति चित्रण है। उसमें व्यक्ति चित्रण की प्रधानता है। मुग़ल शैली का प्रभाव भारतीय चित्रकला पर प्रायः ढाई सौ वर्षों तक रहा। इस बीच एक से अधिक अभिराम चित्र हज़ारों की संख्या में बने।

मुगल

28. राजपूत शैली का विकास राजस्थान, बुंदेलखंड और हिमालय-पंजाब के रजवाड़ों में हुआ। इस शैली के चित्र सोलहवीं सदी के अंत और उन्नीसवीं सदी के मध्य बने। राजपूत शैली मूल रूप से देशी है, परंतु उस पर मुग़ल शैली का भी गहरा प्रभाव नज़र आता है। रंगों के प्रयोग, भूमि की तैयारी और विषयों के चयन में इस शैली के चित्र देशी परंपरा का प्रयोग करते हैं। स्थान-विशेष के कारण उसकी अनेक उप शैलियाँ बन गयीं, जिन्हें कलम कहते हैं। जैसे, पहाड़ी, जम्मू, काँगड़ा, बशोली आदि। यह शैली मध्यकालीन हिंदी काव्य की प्रत्येक प्रवृत्ति को चित्रित करती है। उसके चित्र भारतीय महाकाव्यों, पुराणों, संगीतशास्त्र, रीतिकाव्य को जाने बिना नहीं समझे जा सकते। उसमें कला, संगीत और साहित्य का अद्‌भुत संयोग है। रागमाला के चित्र इस दृष्टि से अनूठे हैं।

29. दकनी शैली भी मुग़ल शैली से प्रभावित प्रांतीय शैली है। यह भी प्रतिकृति प्रधान है और मुख्यतः बीजापुर और हैदराबाद में इसका विकास हुआ है। आधुनिक चित्रकला शैलियों पर मुख्यतः यूरोपीय कला का प्रभाव है किंतु अवनींद्रनाथ ठाकुर के प्रयास से अजंता और मुग़ल शैलियों को पुनः विकसित करने का कार्य किया गया। भारतीय कला को भारतीय जनजीवन और परंपरा से जोड़कर प्रस्तुत करने वालों में अवनींद्रनाथ ठाकुर के अतिरिक्त नंदलाल वसु, अमृता शेरगिल, रामकिंकर आदि का नाम प्रमुख है।

9.2.5 संगीत कला

30. संगीत किसे अच्छा नहीं लगता। कुछ लोग शास्त्रीय संगीत का आनंद लेते हैं तो कुछ लोग सुगम संगीत या मनोरंजक फ़िल्म संगीत सुनकर झूम उठते हैं। ग्रामीण अंचलों के लोग आनंदविभोर होकर लोकगीत गाते हैं। कोई भी विशेष अवसर हो, संगीत के बिना उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। भारत में तो संगीत उतना ही पुराना है जितने वेद। वेद की ऋचाएँ गायी जाती थीं और सामवेद की रचना तो इसी दृष्टि से हुई। ईसवी सदी के आरंभ में भरत ने नाट्यशास्त्र में संगीत की विशद व्याख्या प्रस्तुत की। कालिदास ने "मालविकाग्निमित्र" नाटक में संगीत और अभिनय पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किया। इससे स्पष्ट है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत का आरंभ काफ़ी पहले हो चुका था।

31. भारतीय संगीत का एक व्यवस्थित शास्त्र है। संगीत के सात अंग माने गये हैं - राग, स्वर, ताल, वाद्य, भाव और अर्थ। रागों के विकास में मुस्लिम संगीतकारों का विशेष योग रहा है। तराना, कौल नक्श, गुल आदि अमीर खुसरो ने प्रचलित किये। टप्पा आदि कई लोक शैलियों को विकसित कर उन्हें शास्त्रीय रूप देने का महत्वपूर्ण कार्य भी मुस्लिम गायकों ने किया। आज भी ध्रुपद, ठुमरी, खयाल आदि के प्रसिद्ध गायक मुसलमान हैं।

32. वादन गीत और नृत्य दोनों का सहचर है। भारत में कई वाद्यों का चलन रहा है। संभवतः बाँसुरी प्राचीनतम वाद्य है। नगाड़ा, तुरही (तूर्य), शंख, घंटा, डमरू भी प्राचीन वाद्य हैं। वीणा, सरोद, तंबूरा, सारंगी, दिलरूबा, पखावज, तबला, शहनाई आदि अन्य परंपरागत वाद्य हैं। सितार अमीर खुसरो ने बनाया था।

33. समूचे भारतीय संगीत के दो प्रकार रहे हैं - शास्त्रीय और लोक संगीत। लोक संगीत तो अलग-अलग क्षेत्रों में स्थानीय पंरपरा के अनुसार विकसित होता रहा है। शास्त्रीय संगीत की दो शैलियाँ विकसित हुई हैं - हिंदुस्तानी और कर्नाटक। हिंदुस्तानी उत्तर भारत में और कर्नाटक दक्षिण भारत में विकसित हुई परंपराएँ हैं। इन दोनों में मूलतः कोई भेद नहीं है। अंतर इतना ही है कि उत्तर में बाहर से आने वाली जातियों ने अपने योगदान से संगीत के रूप और अलंकरण में कुछ परिवर्तन कर दिये, जबकि दक्षिण का संगीत ज्यों-का-त्यों बना रहा। मुसलमानों के आगमन से, भारतीय और फ़ारसी-अरबी संगीत का संगम हुआ और परिणामस्वरूप अनेक नये राग बने। हिंदुस्तानी संगीत का नया रूप निखरा।

34. नृत्य का संगीत से गहरा संबध है। ऋग्वेद में नृत्य के अनेक उल्लेख मिलते हैं। शुंगकालीन मूर्तिकला में नृत्य करती नर्तकियों के कई रूप अंकित हुए हैं। संगीत की ही तरह नृत्य की भी दो परंपराएँ हैं - लोक और शास्त्रीय। शास्त्रीय परंपरा के भी दो रूप हैं, उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय। उत्तर भारतीय नृत्यों में प्रमुख है कत्थक। कत्थक का

विकास मुस्लिम शासकों के काल में विशेष रूप से हुआ। कहा जाता है कि अवध के नवाब वाज़िद अली शाह कत्थक के विशेषज्ञ थे। कत्थक में भावों की अभिव्यक्ति पर बल है। दक्षिण नृत्यों में भरतनाट्यम का महत्व है। मुद्राओं और अंगों के अद्‌भुत संचालन में अनंत भाव व्यक्त किये जाते हैं। भरतनाट्यम के अतिरिक्त दूसरा प्रधान नृत्य केरल का कथकली है। वस्तुतः यह एक तरह का नृत्य नाटक है, जिसमें कथा की नृत्यात्मक अभिव्यक्ति होती है। आंध्र प्रदेश की कुचीपुड़ी, उड़ीसा की ओडिसी, मणिपुर की मणिपुरी आदि नृत्य की लोकप्रिय शास्त्रीय शैलियाँ हैं। आधुनिक युग में इन सभी नृत्य शैलियों को संरक्षित और विकसित करने के महत्वपूर्ण प्रयास हुए हैं।

9.2.6 काव्य कला

35. इस इकाई में हम काव्य की चर्चा विस्तार से नहीं करेंगे, क्योंकि साहित्य का अध्ययन तो आप आगे विस्तार से करेंगे ही। यहाँ सिर्फ़ भारतीय साहित्य की प्राचीनता और विविधता को संक्षेप में बताने का प्रयास करेंगे। भारतीय साहित्य के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद की कई ऋचाएँ तो साहित्यिक उत्कृष्टता लिये हुए हैं। ऋग्वेद की ऋचाओं में तत्कालीन लोगों के जीवन के दुख-दर्द, उमंग, उल्लास और आकांक्षाएँ अत्यंत भावप्रवण और कल्पनाशील रूप में व्यक्त हुए हैं। ऋग्वेद संस्कृत की रचना है। संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है। आदि कवि वाल्मीकि की रामायण और व्यास का महाभारत संस्कृत के अमर महाकाव्य हैं ही। कालिदास, भवभूति, भास, अश्वघोष अदि कुछ प्रमुख संस्कृत रचनाकार हैं, जिन्होंने महान काव्य ग्रंथों और नाटकों की रचना की। संस्कृत के अतिरिक्त प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषाओं में भी महान साहित्य की रचना हुई है। इन भाषाओं में मुख्यतः बौद्ध और जैन धर्म से प्रेरित साहित्य रचा गया। अपभ्रंश की ही विभिन्न शैलियों से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का जन्म हुआ। इनमें हिंदी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, उड़िया, असमी, कश्मीरी आदि प्रमुख हैं। हिंदी का साहित्य लगभग एक हज़ार वर्ष पुराना है और आधुनिक युग से पूर्व मुख्यतः ब्रज, राजस्थानी, अवधी, मैथिली आदि बोलियों में रचा गया। दक्षिण की चार भाषाओं- तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ का साहित्य भी कम महत्वूपर्ण नहीं है। तमिल का साहित्य तो लगभग तीन हज़ार वर्ष पुराना है। भारत की सभी आधुनिक भाषाओं में महत्वपूर्ण साहित्य की रचना की गयी है और की जा रही है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र, सुब्रह्मण्यम भारती, प्रेमचंद, गालिब, वल्लतोल आदि कुछ प्रमुख नाम हैं।

36. प्राचीन साहित्य मुख्यतः या तो काव्य के रूप में रचा गया या नाटक के रूप में। भारत में नाट्यकला का विकास काफ़ी पुराना है। भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र की पहले चर्चा की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त भी कई विद्वानों ने नाट्य के विभिन्न अंगों-उपांगों पर विस्तृत विचार किया है। भारतीय काव्यशास्त्र का प्रमुख सिद्धांत रस सिद्धांत नाट्यकला के विकास से ही अस्तित्व में आया है। भारतीय परंपरा में भरत का स्थान वही है जो पश्चिम में अरस्तू का रहा है। भारत में रंगमंच का अद्‌भुत विकास हुआ था। नाट्यशास्त्र में रंगमंच, रंगशाला, अभिनय आदि पक्षों पर विस्तृत विचार किया गया है।

37. इस तरह भारतीय कला की परंपरा अत्यंत उज्ज्वल और समृद्ध रही है। ललित कलाओं के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीयों ने अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत भूमि पर आकर बसने वाली विदेशी जातियों के योग से भारतीय कला को नया जीवन मिलता रहा है। आज भारतीय कला का जो भी स्वरूप हमारे सामने उभर कर आता है वह इन सभी जातियों के सामूहिक सहयोग का सुखद परिणाम है। इनमें यूनानी, शक, कुषाण, मुस्लिम आदि जातियाँ प्रमुख हैं।

बोध प्रश्न

5. नीचे दिये गये उदाहरण किन कलाओं से संबंधित हैं, बताइए।

i) गंधार शैली [ ]	ii) राजपूत शैली [ ]
iii) कथकली [ ]	vi) पखावज [ ]
v) ध्रुपद [ ]	vi) पहाड़ी कलम [ ]

6. i) नीचे उल्लिखित नाम किसी विशेष कला का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन एक नाम उस कला का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बताइए।

क) कुचीपुड़ी

ख) कथकली

ग) ठुमरी

घ) ओडिसी ( )

ii) नीचे उल्लिखित नाम किसी कला की विभिन्न शैलियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन एक नाम उसका प्रतिनिधित्व नहीं करता, बताइए।

क) अजंता

ख) मुग़ल

ग) राजपूत

घ) कर्नाटक

( )

7. i) स्थापत्य और मूर्तिकला की कोई दो समानताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

ii) चित्रकला की विभिन्न शैलियों के नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

iii) शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख शैलियों के नाम बताइए और उनके अंतर को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

iv) संगीत और काव्य कला की दो समान विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

9.3 व्याकरणिक विवेचन

9.3.1 विशेषण

आपने पाठ का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया होगा। इस पाठ में हमने ऐसे वाक्यों का प्रयोग अधिक किया है जिनमें वर्ण्य वस्तु की विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। उदाहरण के लिए, स्थापत्य के अन्य नमूनों की उत्कृष्टता बताने के लिए पाठ में कहा गया है "ताजमहल का **अनुपम** सौंदर्य"। यहाँ **अनुपम** ताजमहल के सौंदर्य का विशेषण है।

इसी तरह के कुछ अन्य वाक्य देखें :

क) शाहजहाँ का योगदान **अविस्मरणीय** है।

ख) हिमाचल प्रदेश के मंदिर **रमणीय** हैं।

ग) माउंट आबू के जैन मंदिर सूक्ष्म नक्काशी के लिए **विख्यात** हैं।

घ) वह **अत्यंत** मनोरम है।

अब आप समझ गये होंगे कि विशेषण शब्द कौन-से होते हैं। वाक्य में जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करता है, उसे **विशेषण** कहते हैं।

ऊपर के चारों वाक्यों में विशेषण क्रिया के साथ प्रयुक्त हुए हैं। जहाँ विशेषण क्रिया के साथ प्रयुक्त होता है, उन्हें **पूरक** या **विधेय विशेषण** कहते हैं।

ऐसे वाक्यों को हम निम्नलिखित रूपों में भी लिख सकते हैं।

क) शाहजहाँ का **अविस्मरणीय योगदान**

.....

ख) हिमाचल प्रदेश के **रमणीय मंदिर**

.....

ग) सूक्ष्म नक्काशी के लिए **विख्यात जैन मंदिर**

.....

ऊपर के तीनों वाक्यों में विशेषण विशेष्य (संज्ञा) के रूप में प्रयुक्त हुआ है। विशेष्य का अर्थ है, जिसकी विशेषता बतायी जाए। इसीलिए जहाँ विशेषण विशेष्य शब्द से पूर्व प्रयुक्त हो उसे **विशेष्य विशेषण** कहते हैं। विशेष्य आम तौर पर संज्ञा शब्द ही होता है। "विशेष्य विशेषण" को "पूरक विशेषण" में और "पूरक विशेषण" को "विशेष्य विशेषण" में बदल सकते हैं।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त पूरक विशेषण को विशेष्य विशेषण में बदलिए।

   i) उदाहरण : भारत देश धर्मनिरपेक्ष है।

   भारत धर्मनिरपेक्ष देश है।

   ii) रामचरित मानस नामक काव्य लोकप्रिय है।

   .....

   iii) आगरा में स्थित ताजमहल भव्य है।

   .....

iv) उस नदी का पानी गंदा है।

.....

v) वह व्यक्ति महान है।

.....

2. नीचे लिखे वाक्यों में प्रयुक्त विशेष्य विशेषण को पूरक विशेषण में बदलिए।

i) वह कैसा स्वस्थ बालक है।

.....

ii) "गोदान" प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है।

.....

iii) मूर्तिकला के विकास में बौद्ध धर्म का उल्लेखनीय योगदान है।

.....

iv) मौर्यकाल की मूर्तियों में अद्‌भुत सौंदर्य है।

.....

विशेषण को संज्ञा में परिवर्तित करना

विशेषण को संज्ञा में बदल कर भी हम वाक्य बना सकते हैं। जैसे "रामचरितमानस एक लोकप्रिय काव्य" को हम "रामचरितमानस नामक काव्य की लोकप्रियता" वाक्य में बदल सकते हैं। यहाँ लोकप्रियता संज्ञा है। "रमणीय मंदिर" को "मंदिर की रमणीयता" में बदल सकते हैं।

अभ्यास

3. नीचे के वाक्यों में प्रयुक्त विशेषणों को संज्ञा में बदलिए :

i) **वह कैसा** स्वस्थ **बालक है।** ( )

ii) **भारत देश** धर्मनिरपेक्ष **है।** ( )

iii) सादा **जीवन और** उच्च **विचार** ( )

vi) **वह बीमारी से** कमज़ोर **हो गया है।** ( )

प्रविशेषण

इस पाठ में आपने गौर किया होगा कि जहाँ विशेषणों का प्रयोग किया गया है, वहाँ कई बार अत्यंत, बहुत, अति आदि शब्दों का भी विशेषण से पहले प्रयोग हुआ है। जैसे "अत्यंत सुंदर मूर्तियाँ", "विशेष उल्लेखनीय" आदि पदों का प्रयोग। विशेषण में अधिक बल प्रदान करने के लिए "अत्यंत","विशेष", "बहुत" जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इन्हें प्रविशेषण कहा जाता है।

नीचे कुछ प्रविशेषण दिये गये हैं। इनका वाक्य में प्रयोग करके देखिए -

अति, अत्यंत, बहुत, काफ़ी, ज़्यादा, विशेष, अधिक।

विशेषण और तुलना

आपने पाठ में निम्नलिखित वाक्य पढ़े होंगे :

2. स्थापत्य और मूर्तिकला में स्थापत्य अधिक स्थूल कला है। (पैरा 6)

3. संस्कृत भारत की सबसे प्राचीन भाषा है (पैरा 35)

4. इन तीनों में चित्रकला सबसे अधिक सूक्ष्म कला है। (पैरा 7)

उपर्युक्त चारों वाक्यों में विभिन्न वस्तुओं की विशेषताएँ बतायी गयी हैं किंतु दूसरी वस्तुओं की तुलना में। पहले दो वाक्यों में दो वस्तुओं की परस्पर तुलना की गयी है, जबकि शेष दोनों वाक्यों में दो से अधिक वस्तुओं की तुलना की गई है।

दो वस्तुओं/व्यक्तियों में तुलना : **जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों की विशेषता को तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, वहाँ वाक्य रचनाएँ निम्नलिखित ढंग से होंगी -**

i) **राम गोपाल** से **बड़ा है।**

ii) **राम और गोपाल** में **राम बड़ा है।**

पहले वाले वाक्य में तुलना के लिए से **और दूसरे तरह के वाक्य में** में **का प्रयोग होगा। दोनों वाक्य रचनाओं से इसका कारण आप समझ गये होंगे।**

दो से अधिक वस्तुओं/व्यक्तियों की तुलना : **जहाँ दो से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों की विशेषता को तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाएगा तो वहाँ वाक्य रचनाएँ निम्नलिखित ढंग से होंगी -**

i) **राम अपनी कक्षा में** सबसे **बड़ा है।**

ii) **भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी** सबसे **अधिक बोली जाती है।**

आप पायेंगे कि इस तरह के वाक्यों में चूँकि तुलना दो से अधिक वस्तुओं में की गई है और उनमें से किसी एक को सबसे अधिक या कम विशेषता **युक्त माना गया है, इसलिए ऐसे वाक्यों में** सबसे **का प्रयोग होगा।**

अभ्यास

4. नीचे दिये गये वाक्यों में दो वस्तुओं या व्यक्तियों की तुलना की गयी है। आप इन वाक्यों को भिन्न रूप में लिखिए।

उदाहरण : i) राम श्याम से बड़ा है।

राम और श्याम में राम बड़ा है।

ii) "प्रेमाश्रम" से "गोदान" अधिक लोकप्रिय है।

.....

iii) संगीत काव्य से अधिक भावप्रधान है।

.....

vi) स्थापत्य और मूर्तिकला में स्थापत्य अधिक स्थूल कला है।

.....

V) इकबाल ज़फ़र से तेज़ दौड़ता है।

.....

9.3.2 वाक्य-रचना

आपने इकाई 8 में विषय के सरल विवेचन के लिए भाषा के उपयोग का अध्ययन किया

नीचे का वाक्य पढ़िए :

मूर्तिपूजा वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार रही है।

क्या इस वाक्य को निम्नलिखित रूप से भी लिख सकते हैं?

मूर्तिपूजा वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार **रहा है।**

आप बता सकते हैं कि इन दोनों वाक्यों में से कौन सा सही है। इसका परीक्षण करने के लिए वाक्य संरचना की जाँच करनी चाहिए।

उपर्युक्त वाक्य में रही है/रहा है क्रिया पूर्तिपूजा से निर्धारित होगी। क्योंकि "रही है" क्रिया मूर्तिपूजा (संज्ञा) से संबद्ध है। मूर्तिपूजा स्त्रीलिंग शब्द है।

"वैष्णव भक्ति का मुख्य आधार" वाक्य का पूरक पद है। "का" का संबंध "आधार" से है।

एक अन्य वाक्य से इसे समझें :

वर्ग संघर्ष क्रांति का आधार रहा है।

मुख्य वाक्यांश

उपर्युक्त वाकय में "वर्ग संघर्ष" पुल्लिंग एकवचन होने के कारण क्रिया का रूप "रहा है" सही है। बहुवचन वाले वाक्य में क्रिया बदल जाएगी, जैसे :

उन्हें कार्य का भौतिक पक्ष कह सकते हैं।

यहाँ "उन्हें" बहुवचन से क्रिया भी बहुवचन के अनुसार परिवर्तित हो गयी है।

अपवाद देखिए :

नेहरूजी आधुनिकता **के** प्रतीक **थे।**

यहाँ नेहरूजी के साथ क्रिया "थे" के प्रयोग का नियम स्पष्ट है लेकिन इस "थे" ने पूरक वाक्य के (संबंध) कारक को भी प्रभावित किया है।

यही वाक्य अगर इस रूप में लिखा हो तो वाक्य रचना के सामान्य नियमों का पालन होगाः

वह आधुनिकता **का** प्रतीक **था।**

उपर्युक्त वाक्य में एक वचन सर्वनाम के कारण पूरक वाक्य में "का" कारक का प्रयोग हुआ है। अर्थात् जहाँ व्यक्तियों के नाम का प्रयोग पुल्लिंग बहुवचन में होता है वहाँ पूरक वाक्य में कारक भी उसी के अनुसार बदल जाता है।

अभ्यास

5. नीचे दी गयी तालिका से पाँच वाक्य बनाइए।

ताजमहल	सत्य	का	अभिव्यक्ति	था।
गांधीजी	प्रेम	की	प्रतीक	थे।
वह	सौंदर्य	के	पुजारी	लगता है।

i) .....

ii) .....

iii) .....

iv) .....

v) .....

9.4 सारांश

- मानविकी की भाषा का प्रयोग सीखने के साथ ही आप ने भारतीय ललित कलाओं के विकास का परिचय भी प्राप्त किया है। इससे आप भारतीय ललित कला का विकास स्वयं अपनी भाषा में बता सकते हैं।
- इस पाठ में विशेषणों का अधिक प्रयोग हुआ है। इसलिए व्याकरणिक विवेचन में "विशेषण" के अध्ययन द्वारा आपने विशेषण का सही प्रयोग करना सीखा है। अब आप स्वयं विशेषणों का सही रूप में प्रयोग कर सकते हैं।
- विशेषण शब्दों को संज्ञा शब्दों में बदलना भी सीखा है। आप स्वयं विशेषण को संज्ञा में बदल सकते हैं। आप प्रविशेषण का भी सही प्रयोग कर सकते हैं।
- दो या अधिक वस्तुओं की विशेषता की तुलना वाले वाक्यों को सही रूप में लिखना भी सीखा है।
- वाक्य-रचना के अंतर्गत मुख्य वाक्यांश और पूरक वाक्यांश के संबंध को समझा है और ऐसे वाक्यों में लिंग, वचन, कारक आदि का सही प्रयोग करना भी सीखा है। आप स्वयं ऐसे वाक्यों की सही रचना कर सकते हैं।

9.5 कुछ उपयोगी पुस्तकें

भगवत शरण उपाध्याय : **भारतीय कला की भूमिका,** पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, रानी झाँसी रोड, नई दिल्ली - 110 005

9.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. i) घ ii) ग iii) क iv) ङ v) ख
2. चित्रकला - ख, घ, ङ

   मूर्तिकला - ख, ग, ङ

   संगीत कला - क, च

   काव्य - क, च

   नृत्य - क, ख, ङ, च

   नाट्य - क, ख, ङ, च

   फ़िल्म - क, ख, घ, ङ, च

   फ़ोटोग्राफ़ी - ख, घ, ङ
3. i) ग ii) ख
4. i) द्राविड़ शैली, नागर शैली एवं वासर शैली

   ii) आगरे का ताज़महल

   दिल्ली का लाल किला

   दिल्ली की जामा मस्ज़िद

   iii) गंधार प्रदेश में ग्रीक कलाकारों ने अपनी शैली से जिन भारतीय विषयों, अभिप्रायों, प्रतीकों का कलात्मक रूपायन किया, उन्हें गंधार शैली के नाम से जाना जाता है।

5. i) मूर्तिकला ii) चित्रकला iii) नृत्य
iv) संगीत v) संगीत vi) चित्रकला

6. i) ग ii) घ

7. i) क. स्थापत्य और मूर्ति कला दोनों दिक् आधारित कलाएँ हैं।
ख. दोनों कलाएँ त्रिआयामी हैं।

ii) चित्रकला की शैलियाँ : 1. अजंता, 2. गुजरात, 3. मुगल, 4. राजपूत, 5. दकनी, 6. आधुनिक

iii) हिन्दुस्तानी और कर्नाटक

दोनों शैलियाँ मूलतः एक हैं। अंतर इतना ही है कि उत्तर में बाहर से आने वाली जातियों ने अपने योग से हिन्दुस्तानी संगीत के रूप में और अलंकरण में कुछ परिवर्तन कर दिये।

iv) क. दोनों श्रव्य कलाएँ हैं।
ख. दोनों में भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति हो सकती है।

अभ्यास

1. i) रामचरितमानस लोकप्रिय काव्य है।
ii) भव्य ताजमहल आगरा में स्थित है।
iii) उस नदी में गंदा पानी है।
iv) वह महान व्यक्ति है।

2. i) वह बालक कैसा स्वस्थ है।
ii) प्रेमचंद का उपन्यास "गोदान' सर्वश्रेष्ठ है।
iii) मूर्तिकला के विकास में बौद्धधर्म का योगदान उल्लेखनीय है।
iv) मौर्यकाल की मूर्तियों में सौंदर्य अद्‌भुत है।

3. i) स्वास्थ्य ii) धर्मनिरपेक्षता iii) सादगी और उच्चता iv) कमज़ोरी

4. i) "प्रेमाश्रम" और "गोदान" में "गोदान" अधिक लोकप्रिय है।
ii) संगीत और काव्य में संगीत अधिक भावप्रधान है।
iii) मूर्तिकला से स्थापत्य अधिक स्थूल कला है।
iv) इक़बाल और ज़फ़र में इक़बाल तेज़ दौड़ता है।

5. तालिका से निम्नलिखित सही वाक्य बन सकते हैं।
i) ताजमहल सौंदर्य का प्रतीक लगता है।
ii) ताजमहल प्रेम का प्रतीक लगता है।
iii) ताज़महल सौंदर्य की अभिव्यक्ति लगता है।
iv) ताजमहल प्रेम की अभिव्यक्ति लगता है।
v) गांधीजी सत्य के प्रतीक थे।
vi) गांधीजी सत्य के पुजारी थे।
vii) वह प्रेम का पुजारी था।
viii) वह सत्य का पुजारी था।
ix) वह प्रेम का प्रतीक था।
x) वह सत्य का प्रतीक था।